

---

# Bhagavatbhaktipadyam 1

---

## भगवत्भक्तिपद्यम् १

---

### Document Information

Text title : Bhagavatbhaktipadyam 1

File name : bhagavatbhaktipadyam1.itx

Category : dattatreya, deities\_misc, vAsudevAnanda-sarasvatI

Location : doc\_deities\_misc

Author : vAsudevAnandasarasvatI TembesvAmi

Description-comments : From stotrAdisangraha

Latest update : May 12, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 12, 2021


*sanskritdocuments.org*

---

भगवत्भक्तिपद्यम् १



पद्यम् (चाल - जमका अजब तडाका)  
भगवन् भक्तिरसं देहि स्याद्धन्यो येन तु देही ॥ ध्रु ॥  
सकामधर्मं हृदापि नेच्छोऽनर्थकरेऽस्मिन् तुच्छे ।  
निरास्पदेऽनिलहतनारीव स्वार्थं को वाऽन्विच्छेत् ॥ १ ॥  
अखण्डभगवद्भजनविघ्नकृन्नियते कर्मण्यपि मे ।  
सदानादरस्त्वद्भजनादरः परास्तु नाऽन्येच्छा मे ॥ २ ॥  
ननु स्वधर्मत्यागे भजतां कृतार्थता चेद्दिष्ट्या ।  
येन यदि वाऽतो भ्रश्येद्वाऽपक्वः किं स न साधुः ॥ ३ ॥  
न भक्तिरसिकोऽनर्थं याति क्वापि समर्थः ।  
भक्तिवासनासद्भाग्यान्नो हीनोऽपि भजेत्स्वार्थम् ॥ ४ ॥  
भजतो जन्मान्तरेऽप्यभद्रं नीचगतो लभेत्किम् ।  
स्वधर्मनिरतो चेद्भक्तो भद्रं क्वापि लभेत्किम् ॥ ५ ॥  
यद्यपि धर्मादुपरि सुखं स्यात्तदर्थयत्नो व्यर्थः ।  
सुखानि दैवाद् दुःखानीवाऽऽयान्ति क्वापि समर्थ ॥ ६ ॥  
यदधोलभ्यं चोर्ध्वमलभ्यं तदेव देव प्रेष्ठ ।  
त्वत्पदभजनं जनिमृतिभञ्जनं मे देह्यमरश्रेष्ठ ॥ ७ ॥  
इति श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं भगवत्भक्तिपद्यं सम्पूर्णम् ।

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

